स्वामी विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययनः वर्तमान में प्रासंगिकता

BINOD BIHARI MAHTO KOYLANCHAL UNIVERSITY,
DHANBAD, JHARKHAND

दर्शनशास्त्र विभाग (मानविकी संकाय) में पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रस्ताव

शोध–निर्देशकः

डॉ० अजीत कुमार वर्णवाल
सहायक प्राध्यापक दर्शनशास्त्र विभाग
आर. एस. मोर कॉलेज, गोविन्दपुर, धनबाद

शोधार्थी :

ऋतु प्रिया
दर्शनशास्त्र विभाग

स्वामी विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययनः वर्तमान में प्रासंगिकता

- ## विषय प्रवेश (Introduction):

शिक्षा सर्वयुगिन महत्वपूर्ण है शिक्षा की पद्धति हर युग में भले ही भिन्न–भिन्न हो सकता है, परंतु शिक्षा से ही मनुष्य का सर्वाधिक विकास हो सकता है।

प्रस्तावित शोध का विशेष स्वामी विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान में प्रासंगिकता है। प्रस्तावित शोध कार्य में स्वामी विवेकानंद एवं गांधी जी के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे तथा यह जानने का प्रयास करेगे कैसे यह आज के युवाओं का मार्गदर्शन कर सकते है स्वामी विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा दर्शन के वर्तमान कालीन प्रासंगिकता का अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा।

अनेक पुस्तको ,पत्रिकाओं एवं लेखों का अध्ययन करते हुए मैंने यह पाया है कि भारतीय शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारकों एवं दार्शनिकों में स्वामी विवेकानंद एवं गांधी जी का एक अद्वितीय स्थान रहा है। स्वामी विवेकानंद एवं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी दोनों 20वीं सदी के युग पुरुष कहे जाते हैं। इस शोध कार्य में हम विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा संबंधी महत्व को समझने के लिए दोनों विचारकों के समानता एवं भिन्नता के साथ–साथ दोनों का महत्व एवं प्रासंगिकता पर विचार करेंगे।

'स्वामी विवेकानंद के विचारः

स्वामी विवेकानंद जी ने हिंदू धर्म को अध्यात्मवाद से जोड़ा तथा मनुष्य को सार्वभौम धर्म की शिक्षा दी। स्वामी विवेकानंद भी एक महान सीक्षाशास्त्री थे। उनके अनुसार शिक्षा मनुष्य में अंतनिहित पुण्यता की अभिव्यक्ति है। मानव में अनेक प्रकार की शक्तियां जन्म से ही विद्यमान रहती है शिक्षा उन शक्तियों या गुणों को विकसित करती है। ज्ञान पूरी तरह से बाहर से नहीं आती है, बल्कि मनुष्य के भीतर छिपी रहती है सभी तरह के ज्ञान मनुष्य के अंदर विद्यमान होता है बस उसे विकसित करने कि आवश्यकता है,''जिस प्रकार एक चमकती पत्थर के टुकड़े में अग्नि निहित रहती है उसी प्रकार मनुष्य के अंदर ज्ञान निहित रहती है''। [1]

विवेकानंद जी के लिए शिक्षा का उद्देश्य एकाग्रता का पालन, चारित्रिक विकास ,शारीरिक विकास , स्वय पर भरोसा, व्यक्तित्व का विकास, श्रद्धा एवं आस्था का विकास, त्याग की भावना का विकास एवं सार्वभौमिक भाईचारे को बढ़ावा देना है। इन सभी उद्देश्यों कि पूर्ति के लिए विवेकानंद जी ने शिक्षा का आधार व्यावहारिक वेदांत तथा उपनिषद को बनाया।स्वामी विवेकानंद सर्वव्यापी मानव कल्याणकारी एवं सर्वहितकारी शिक्षा पर जोर देते थे। इसलिए उन्होंने शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने का प्रयास किया। विवेकानंद जी ने शिक्षा को संतुलित एवं उदार प्रारूप देकर देश के सामने प्रकट किया उन्होंने कहा हमें आवश्यकता है विदेशी नियंत्रण से हटकर अपनी विविध शास्त्रों, विधाओं का अध्ययन और साथ ही साथ अंग्रेजी भाषा, पाश्चात्य विज्ञान सीखा जाए। हमें उद्योगों की उन्नति के लिए यांत्रिक शिक्षा भी प्राप्त होनी चाहिए जिससे देश की युवा पीढ़ी नौकरी ढूंढने के बजाय अपनी जीविका के लिए बेहतर धन की प्राप्ति कर सके और कठिन समय के लिए कुछ बचा भी सके।

शिक्षा के महत्व को सर्वोपरी बताते हुए स्वामी विवेकानंद जी ने ज्ञान दान को श्रेष्ठ दान बताया। उन्होंने चार प्रकार के दान बताएं ऋधर्म दान (आध्यात्मिक ज्ञान का दान) ज्ञान दान, प्राण दान , अन्न दान। इन सब में उन्होंने प्रथम दो दान को श्रेष्ठ माना है।

शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में स्वामी जी की तुलना विश्व के महानतम शिक्षा शास्त्रीयों यथा प्लेटो ,रूसो, रसेल , ब्रैडले से की जाती है क्योंकि इन महान शिक्षा शास्त्रियों ने कुछ सिद्धांत दिए हैं जिसके आधार पर विशाल ज्ञान का निर्माण कर सकते हैं।स्वामी जी के अनुसार,''सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो वह शब्दों को रटे नहीं व्यक्ति के मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास हो, जिससे वह स्वयं ही स्वतंत्रता पूर्वक विचार कर ठीक ठीक सही निर्णय कर सके।'' [2]

शिक्षक सुझाव प्रस्तुत करते हैं। जिसका अवलोकन करके आंतरिक शिक्षा को समझने और सीखने की प्रेरणा मिल जाती है। इसी दृष्टि से स्वामी जी ने अपने समय की शिक्षा को निषेधात्मक बताया तथा उन्होंने कहा है। कि आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिन्होंने कुछ परीक्षाएं पास कर ली हो तथा अच्छे भाषण दे सकता है। पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा आम नागरिकों को जीवन की कठिनाइयों से लड़ने के लिए तैयार नहीं कर सकती ऐसे शिक्षा से क्या लाभ है ? उन्होंने कहा है हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्तियों कि शुद्धि होती, है बुद्धि का विकास होता है, जिसको प्राप्त कर मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है इस प्रकार शिक्षा आत्मविकाश की प्रक्रिया है, मनुष्य स्वयं को शिक्षित करता है विकास करता है।

गांधी के विचार

गांधी जी को यह स्पष्ट मानना था कि नागरिकों की शिक्षा किसी भी समाज का आधार स्तंभ होता है। इसके लिए उन्होंने अपने सोच के अनुसार अहिंसक समाज के लिए एक नई शिक्षा व्यवस्था की अवधारणा पेश की और अनेकों वर्षों तक इस अवधारणा पर प्रयोग भी किया। बेसिक शिक्षा जीवन से जुड़ी हुई होनी चाहिए तथा इसके द्वारा शरीर, आत्मा एवं बुद्धि का विकास हो। गांधी जी के अनुसार ,''सही शिक्षा वह है जो बच्चों की बौद्धिक , शारीरिक एवं आध्यात्मिक योग्यताओं को उजागर करें उसका विकास करें। यह शिक्षा बेरोजगारी के खिलाफ एक प्रकार का हथियार होना चाहिए।'' [3] गांधी जी पर प्रयोजनवादी विचारको के गहरा प्रभाव था।उनका मानना था कि राष्ट्र व समाज के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शिक्षा के लिए गांधी जी की एक विशेष सोच थी जो वर्तमान में गांधी के शिक्षा दर्शन के रूप में प्रचलित है। उन्होंने शिक्षा को अपने शब्दों में व्याख्यान करते हुए कहा है कि,''शिक्षा से मेरा अर्थ बालकों के मन–मस्तिष्क ,शरीर और आत्मा का पूर्ण विकास है।'' [4] वह शिक्षा के द्वारा ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जो पूर्ण रूप से शोषण विहीन हो जहां किसी तरह की जाति, वर्ग, लिंग का भेदभाव ना हो। गांधी के अनुसार समाज के प्रत्येक मनुष्य को शिक्षित होना आवश्यक है, शिक्षा के बिना एक आधुनिक एवं विकसित समाज का स्थापना का सपना भी नहीं देखी जा सकती।

गांधी जी के शिक्षण उद्देश्य को दो भागों में विभाजित किया गया हैः

1) तात्कालिक उद्देश्यः' बालक के आध्यात्मिक ,मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों का विकास करके उसके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास।

'बालक को उसकी संस्कृति का सही ज्ञान देना तथा बालको को अपनी संस्कृति को व्यक्त करने की सीख देना।

'बालको को उच्च जीवन की ओर आगे बढ़ना।

'बालक के चरित्र का निर्माण करना और नैतिक मार्ग दिखाना।

'उसे जीविकोपार्जन के योग्य बनाना ताकि राष्ट्र में बेरोजगारी के प्रतिशत में गिरावट आए।

2) अंतिम उद्देश्य या सर्वोच्च उद्देश्यः अंतिम उद्देश्य है, आत्मा शरीर तथा ईश्वर का ज्ञान।

महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षाः बुनियादी शिक्षा (बेसिक शिक्षा) का सूत्र शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा गांधी के द्वारा दी हुई एक महत्वपूर्ण देन है। बच्चों की बुनियादी शिक्षा कैसी होनी चाहिए, उसका

स्वरूप क्या होना चाहिए, इसकी पूर्ण मॉडल गांधी जी ने 1937 में वार्धा के राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में प्रस्तुत किए थे। जिसे 1938 के हीरापुर सम्मेलन में स्वीकृत प्रदान की गई। जिसमें दसवीं कक्षा तक अंग्रेजी मुक्त एवं उद्योग आधारित शिक्षा को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया था। इस शिक्षा का जुडाव जीवन से था, इसका जड़ एवं उद्देश्य भी जीवन ही था। जमीन से जुड़े होने के कारण ही उन्होंने इस प्रारूप का नाम बुनियादी शिक्षा दिया। उन्होंने बुनियादी शिक्षा के तौर पर हस्तशिल्प शिक्षा पर जोर दिया।

अंतः विवेकानंद एवं गांधी जैसे महान शिक्षा दार्शनिकों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करके हम देख सकते हैं कि दोनों ही शिक्षा द्वारा बालक के विकास के लिए अलग–अलग दृष्टिकोण को प्राथमिकता देते थे। विवेकानंद जी जहां शिक्षा के माध्यम के रूप में व्यावहारिक वेदांत को महत्वपूर्ण मानते थे। वहीं गांधी जी बालकों को स्वावलंबी और साक्षर बनाना चाहते थे, जिसके लिए बुनियादी ज्ञान को प्रसय दिया। इन दोनों विचारकों का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण शैक्षणिक ही नहीं अपितु दार्शनिक दृष्टि से भी मानव कल्याण के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

- ## साहित्य के प्रारंभिक समीक्षा (Preliminary review of literature)

मानव संस्कृति के विकास का सारा श्रेय मानवीय शिक्षा को जाता है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक किसी भी सभ्यता के समुचित ज्ञान के लिए उसके शिक्षा पद्धति का अध्ययन करना आवश्यक है। जिससे उसे पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखा जा सके, जिससे उसका प्रचार प्रसार किया जा सके ,संशोधन किया जा सके इन सब कार्यों के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण रहा है। भौतिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक उत्थान के विधिवत निर्वाह के लिए शिक्षा की आवश्यकता को सदा स्वीकार किया गया है 'सुभाषित रत्नसंदोह, में कहा गया है कि,''ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो उसे समस्त तत्वों के मूल को जानने में सहायता करता है तथा सही कार्यों को करने की विधि बताता है।'' [5]

प्राचीन काल से वर्तमान तक शिक्षा का रूप परिवर्तन होते रहा है ,परंतु शिक्षा का महत्व सदैव रहा है अर्थात शिक्षा के स्वरूप की साहित्यक समीक्षा उस प्रकाश की तरह है जो अंधेरी में लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मार्ग को प्रकाशित करेगी।

- ### हड़प्पा सभ्यता :

भारतीय इतिहास में जो सबसे प्राचीन सभ्यता हड़प्पा सभ्यता है। जो प्रमाण प्राप्त हुए हैं उसके आधार पर कहां जा सकता है कि उस समय ज्ञान कि जो लिपि मोहरों पर प्राप्त हुआ ही वह लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है। पर निश्चित रूप से यह लिपि दाएं से बाएं लिखी जाती थी जिससे यह सिद्ध होता है कि उस काल में भी शिक्षा का महत्व था।

- ### पूर्व वैदिक काल:

ऋग्वेद काल को पूर्व वैदिक काल माना जाता है। ऋग्वेद हिंदू धर्म की सबसे प्राचीनतम रचना है। ऋग्वेद से पूर्व शिक्षा का कोई कर्मिक विकास का इतिहास नहीं प्राप्त होता है। ऋग्वेद से पहले भारत में हड़प्पा सभ्यता आ चुकी थी परंतु उसके अंतर्गत शिक्षा प्रणाली के कोई प्रामाणिक उल्लेख नहीं प्राप्त होते बल्कि शिक्षा के होने का सिर्फ अंदाजा ही लगाया जा सकता है।

पूर्व वैदिक काल में प्राथमिक शिक्षा परिवारों में होती थी तथा उच्च शिक्षा गुरुकुल में होती थी। वैदिक काल में गुरु शिष्य को वैदिक साहित्य के आधार पर ज्ञान देते थे जो आठ थेः चार वेद, आठ वेदांग,चार उपवेद, चार ब्राह्मण, 108 उपनिषद, दर्शन के छः संप्रदाय भागवत गीता एवं स्मृतियां , यह सभी वैदिक शिक्षा प्रणाली के अंग थे। पूर्व वैदिक काल में शिक्षा शांत कोलाहल से दूर जंगलों में शांत स्थान पर दि जाति थी।

''संक्षेप में कहां जा सकता है कि ऋग्वेद में जो शिक्षा पद्धति का विकास हुआ, वह 'महत ज्ञान' के संपादक तथा धर्म एवं ब्रह्मा से संबंध रखती है।'' [6]

- **उत्तर वैदिक काल**

उत्तर वैदिक काल में बड़े–बड़े नगरों और तीर्थ स्थान पर शिक्षा देने का कार्य प्रारंभ हुआ। उस समय तीर्थ स्थान धर्म प्रचार के केंद्र होने के साथ–साथ उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में भी विकसित हुए। तक्षशिला, मिथिला ,पाटलिपुत्र , कन्नौज कर्नाटक और कांची उस समय के मुख्य शिक्षा केंद्र थे।

वैदिक कालीन शिक्षा का मकसद मानव का संपूर्ण विकास करना था। छात्रों को अपना मानसिक ,शारीरिक चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास करने के पूर्ण अवसर दिए जाते थे।

- **सूत्र साहित्यः**

वैदिक साहित्य के उपरांत सूत्र साहित्य का युग माना जाता है।'', इस समय तक ब्राह्मणी शिक्षा पूर्णता सुसंगठित हो चुकी थी। सूत्र साहित्य का युग 600 ईसवी पूर्व से 200 ईसवी पूर्व है।''[7] सूत्र साहित्य की शिक्षा पद्धति वैदिक शिक्षा पद्धति से बदली तो नहीं थी परंतु इस साहित्य काल में पुरांतर धर्म के सर्वमान्य सिद्धांत जो छोटे–छोटे भागों में बटे थे उन्हें ठोस एवं संक्षिप्त सूत्रों में एकत्रित किया गया था।

- **महाकाव्य की शिक्षा**

रामायण में महाभारत प्रमुख महाकाव्य है। इस काव्य से उस काल के संस्कृति की झलक मिलती है अर्थात इसमें ऐसे साक्ष्य है जिसके द्वारा हमें उसे युग के शिक्षा का स्वरूप भी प्राप्त होता है जैसे ,''वर्णों एवं आश्रमों की व्याख्या, आदर्श विद्यार्थियों की परिभाषा, तत्कालीन शिक्षा केंद्र का वर्णन हमें इस महाकाव्य में प्राप्त होता है।

- **वर्ण अनुसार शिक्षाः**

प्रारंभ से ही आर्यों ने यह अनुमान लगा लिया कि बिना कार्य को वर्गीकरण किए हुए समाज का संतुलित विकास नहीं हो सकता ।अतः उन्होंने संपूर्ण जाति को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में बांट दिया तथा उनकी शिक्षा का आधार भी उनके वर्ण को ही बनाया।

ब्राह्मणों को वेद पढ़ना पढ़ाना, यज्ञ करना तथा विद्या देने की शिक्षा दी जाती थी। वही क्षत्रियों को वेद ,उपनिषदों आदि से साधारण परिचय भर ही प्रयाय समझा गया था ,क्षत्रियों को देश की सुरक्षा , आंतरिक व्यवस्था, युद्ध एवं शासन कार्य को कुशलता प्राप्त करने की शिक्षा दी जाती थी । वैश्य का प्रमुख कार्य कृषि व्यापार था, अतः उन्हें कृषि पशुपालन तथा व्यापार की शिक्षा दी जाती थी। शुद्रो को शिक्षा मना हि थी।

- **बौद्ध शिक्षाः**

बौद्ध काल की शिक्षा तक लेखन कला का प्रचार हो चुका था, परंतु समाज के प्रत्येक वर्ग में इसका प्रचलन अधिक नहीं था। इस कारण वैदिक शिक्षा की तरह ही बौद्ध शिक्षा भी मौखिक ही दी जाती थी। शिक्षा के लिए बौद्ध विहारों का निर्माण हुआ ,जहां बौद्ध भिक्षु बौद्ध धर्म से जुड़ी शिक्षा प्रदान करते थे।

''बौद्ध शिक्षा के आरंभिक दिनों में तो स्त्री शिक्षा को बहुत प्रोत्साहन मिला, और स्त्रियों के लिए अलग मठ भी बनाया गया किंतु चौथी शताब्दी में भिक्षुओं के विहारो का हास्य होने के लगा, क्योंकि बौद्ध विहारों का शिक्षा का इतना महत्व बढ़ गया था कि वहां शिक्षा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदान किया जाने लगा ,अतः स्त्रियां उन विद्यालयों से लाभ नहीं उठा सकी।'' [7]

- **जैन शिक्षाः**

जैन शिक्षा पद्धति का प्राचीन काल से क्रमिक विकास हुआ तीर्थकरो , गणीधारो से आचार्य परंपरा द्वारा शिक्षा निरंतर चलती रही। जैन शिक्षा प्रणाली के शिक्षा में अंतिम रूप में मुक्ति को ही श्रेष्ठ माना। जैन शिक्षा का इतिहास मुख्यत दक्षिण भारत का इतिहास है। जैन दर्शन बालक को शिक्षा के माध्यम से सदाचारिता ,संयम, तप,अहिंसा, सत्य त्याग, शान्ति, स्वाध्याय आदि गुणों के विकास कि ओर अग्रसर करना चाहा।

- **मध्यकालीन शिक्षाः**

मध्यकाल के दौरान कई राजवंशों का उदय हुआ सेन ,प्रतिहार, पाल चोल आदि इन राजवंशों ने शिक्षा साहित्य एवं कला को बढ़ावा दिया तथा पालो के समय उदंतपुरी और विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।

1000 ईस्वी में मोहम्मद गजनी तथा 1175 ईस्वी मे मोहम्मद गौरी के भारत में आगमन हुआ एवं बौद्ध एवं हिंदू शिक्षा केन्द्रों को क्षति पहुंचाई गई। भारत को लूटकर उन रुपए से मदरसे एवं पुस्तकालय खोले गए तथा एक नई शिक्षा प्रणाली को जन्म दिया। अलाउद्दीन बख्तियार तथा औरंगजेब जैसे शासको ने भारतीय संस्कृति और शिक्षा को नष्ट करने का प्रयास किया। उन्होंने बौद्ध एवं हिंदू शिक्षा केन्द्रों विश्वविद्यालय को नष्ट करके उनके स्थान पर इस्लामी शिक्षा का प्रसार किया।

इस्लामी प्रारंभिक शिक्षा का उद्देश्य बालक को शब्द ज्ञान करना था तथा धार्मिक प्रार्थनाएं सीखना था। यह शिक्षा मकतब एवं मदरसे में दिया जाता था। मकतब का अर्थ उस स्थान से है जहां लिखित शिक्षा प्रदान की जाती थी, यह मकतब मस्जिदों से जुड़े होते थे। उस काल में स्त्री शिक्षा काफी हद तक कम हो गई थी ,क्योंकि मुसलमानों की स्त्रियां प्रदा प्रथा मानती थी और वो मकतबो तथा मदरसे मे नहीं जाती थी।

आधुनिक भारत की शिक्षा :

शिक्षा की प्रारंभिक शैली में बड़े परिवर्तन ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत पर नियंत्रण की पश्चात हुए, इसमें एक नई औपचारिक शिक्षा प्रणैाली का प्रसार हुआ ।जो थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ आज तक चल रही है।

इसके अलावा कुछ अन्य शोध पत्र तथा पुस्तको कि भी साहित्य समीक्षा कि गई है ।

डॉ० देव सरकार ने अपने शोधग्रंथ "द इवैल्युएशन ऑन द फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन इन इन्डिया (1964) में आधुनिक भारत शिक्षा दर्शन में स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन के मानवतावादी, आदर्शवाद, अध्यात्मवाद,अंतर्राष्ट्रीयवाद, प्रयोजनवाद,प्रकृतिवाद तथा अति प्रकृतिवाद के दृ ष्टिकोण अध्ययन से किया ।

अभ्यंकर, एस. वी (1987) में स्वामी विवेकानंद जी के विचार और उनकी दार्शनिंक नींव के गहन और आलोचनात्मक विश्लेषण पर एक अध्ययन किया, जिसमें मूल्य शिक्षा पर विशेष ध्यानकेन्द्रित किया गया ।

अध्ययन के निष्कर्ष– विवेकानंद का शिक्षा दर्शन का विचार मुख्य रूप से अद्वैत वेदांत पर आधारित था,जो दार्शनिक शिक्षा के पथ पर था । अपने पत्रों एंव लेखों के माध्यम से शिक्षा से सम्बंधित, विवेकानंद का जोर विशेष कर बाहरी मूल्यों प्रेम, आत्म साक्षात्कार, साहस, स्वतंत्रता, भाइचारे, सत्य, निडरता, श्रम की गरिमा आदि के विकास पर है ।

गुप्ता, आर. पी. (1985) ने स्वामी जी के शैक्षिक विचारों पर एक अध्ययन किया । इसमें स्वामी जी के शैक्षिक विचार एंव शैक्षिक प्रणाली के संगठन की उपयोगिता का वर्णन किया गया था।

निष्कर्ष – विवेकानंद जी ने छात्रों के मानसिक विकास एंव शारीरिक विकास पर जोर दिया,विवेकानंद जी ने शिक्षा को व्यक्ति के जीवन के प्रति तैयार करने का एक तंत्र माना था।

मिश्रा और शिव,एस. (1986) ने स्वामी जी के शैक्षिक दर्शन और शिक्षण पद्धति का आलोचनात्मक अध्ययन किया । इस पत्र में अध्ययन के दौरान उन्होंने स्वामी विवेकानंद जी की शिक्षा को सूचनाओ के अभिन्न अंशो का संग्रह माना । साथ ही साथ व्यक्ति की आंतरिक क्षमताओ को प्रकट करने का जरिया भी माना । स्वामी विवेकानंद जी ने आध्यात्मिक एंव व्यावसायिक शिक्षा दोनों पर साथ–साथ जोर दिया । उनके अनुसार शिक्षण की शिक्षा विधि में एकाग्रता,संपर्क,आत्म अनुभव एंव प्रश्न–उत्तर शामिल थे । इसका मूल्यांकन आधुनिक संदर्भ में किया गया था, यह आम तौर पर उस वक्त उपयोगी पाए गये थे ।

महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक ,सत्य के साथ मेरे प्रयोग में बालको को खेल के रूप में शिक्षा देने की बात कही है।

डॉ.मुरारी कृष्ण ,गांधी के मानवतावादी दर्शन कि प्रासंगिकता (2023),पुस्तक के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है, कि मानवीय मूल्यों के विकास के लिए शिक्षा परम आवश्यक है।

- **समस्या का विधान (Statment of the problem)**

हाल के दशकों में देश के सामाजिक, आर्थिक एवं अन्य क्षेत्र में नीतिगत एवं व्यवस्थित ज्ञान में काफी प्रगति हुई है। इसके परिणाम स्वरुप देश के विकास दर तेजी से बढ़ी है। इस बढ़ती विकास दर ने देश के अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधार की गति प्रदान की है परंतु इन परिवर्तनों ने हमारी शिक्षा व्यवस्था की मूल समस्याओं को दूर नहीं किया है। प्रस्तुत शोध में हम वर्तमान शिक्षा व्यवस्था तथा स्वामी विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा दर्शन की समानता तथा भिन्नता का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता कि व्याख्या करेंगे।

- **समस्या का अनुसंधान (Research of the problem)**

आज वर्तमान समय में लोग अपनी मानवीय मूल्य खोते जा रहे है। इस कारण आज समाज में भ्रष्टाचार, व्यभिचार तथा अमानवीयता बढ़ता जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में विवेकानन्द एव गांधी का शिक्षा दर्शन बहुत ही प्रासंगिक है।

- **शोध का उद्देश्य (objective of the study)**

इस शोध कार्य का उद्देश्य समकालीन भारतीय दर्शन में शिक्षा के महत्व एवं व्यापकता का विवेचन करना है। इसके अतिरिक्त स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन से संबंधित विचारों का अध्ययन करना है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य उद्देश्य भी हैः–

’स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के जीवन दर्शन जीवन वृतांतो का अध्ययन करना।

’स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन, शिक्षा का उद्देश्य ,पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, विद्यालय ,शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अनुशासन संबंधी विचार एवं व्यावहारिक वेदांत का अध्ययन करना।

’महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन, शिक्षा का उद्देश्य, पाठ्यक्रम शिक्षण विधि ,विद्यालय, शिक्षक, शिक्षार्थी बुनियादी शिक्षा एवं 3 एच का अध्ययन करना ।

’स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के विचार से स्त्री शिक्षा , पोद्ध शिक्षा ,आध्यात्मिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा ,चारित्रिक शिक्षा के अध्ययन एवं चरित्र निर्माण की शिक्षा हेतु वर्तमान परिस्थितियों के परिपेक्ष में उपयोगी सुझाव देना।

'वर्तमान परिवर्तनशील समाज में स्वामी जी एवं गांधी जी के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।
'स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन का वर्तमान मानव पर प्रभाव एवं प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

- **परिकल्पना (Hypothesis):–**

स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के दार्शनिक चिंतन हमेशा से मानव कल्याण पर आधारित रहे हैं। वे दोनों हमेशा से ही मनुष्य के आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास के लिए जीवन भर भिन्न–भिन्न मार्ग की खोज करते रहे हैं तथा शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में अनेक कार्य किए है। इस शोध कार्य में स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी की शिक्षा दर्शन से संबंधित शैक्षिक विचारों का तुलना करने के पश्चात एक समग्र एवं समावेशी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाएगा जो वर्तमान में मानव के विकास पर प्रभाव तथा प्रासंगिकता को निर्धारित करेगा।

- **शोध प्रारूप का अध्ययन (Study of research design)**

प्रस्तुत शोध दार्शनिक एवं शैक्षिक शोध कार्य है। इस शोध कार्य मे समकालीन भारतीय दार्शनिको स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी का अध्ययन किया जाएगा साथ हि उनके शिक्षा संबंधी पुस्तकों का अवलोकन किया जाएगा। इस शोध कार्य को नए तरीके से विकसित करने के लिए ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक विधियों का प्रयोग किया जाएगा।

विवेकानंद द्वारा लिखी पुस्तक तथा उनके ऊपर अन्य लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तक,महात्मा गांधी द्वारा लिखी पुस्तक तथा उनके ऊपर अन्य लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तको साहित्य कि सहायता ली गई है। एवं भविष्य में शोध कार्य हेतु ली जाएगी। दोनों दार्शनिकों की शैक्षिक विचारों की विशेष संदर्भ इस शोध कार्य के लिए विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण किया जाएगा ।इसके साथ ही साथ नेट , टी.भी,पत्र , पत्रिकाओं आदि का भी सहारा लिया जाएगा।

- **तथ्य संकलन (Tools to be used in the collection of data and analysis)**

तथ्य को संकलन के लिए विभिन्न पुस्तकालय में उपलब्ध शिक्षा समाज एवं दर्शन से संबंधित दार्शनिक विचारको की पुस्तक या उनसे संबंधित पुस्तकों से अध्ययन सामग्री एकत्रित की जाएगी। शोध के क्रम में स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के शिक्षा–दर्शन विषय से संबंधित प्रमुख चिंतको, विचारको एवं दार्शनिकों के द्वारा प्रकाशित लेख, रचनाओं ,शोध प्रबंध आदि की सहायता ली जाएगी। इस प्रकार विभिन्न स्रोतों द्वारा तथ्यों का संकलन कर उसका विश्लेषण किया जाएगा साथ ही इंटरनेट पर उपलब्ध विश्वसनीय जानकारी कि भी सहायता ली जाएगी, इस प्रकार प्रथम माध्यम के अंतर्गत प्राथमिक स्रोतों तथा द्वितीय माध्यम के अंतर्गत द्वितीय स्रोतों का संकलन किया जाएगा।

- **शोध कार्य का महत्व (Singnificance of research work):–**

  स्वामी विवेकानंद जी का दार्शनिक चिंतन हमेशा से ही मानव कल्याण एवं सार्वभौमिक धर्म पर आधारित था। वहीं दूसरी ओर महात्मा गांधी का दार्शनिक चिंतन सत्य अहिंसा एवं स्वालंबन पर आधारित था। दोनों दार्शनिको ने हमेशा से मनुष्य के आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास के लिए जीवन भर भिन्न भिन्न मार्ग की खोज करते रहे दोनों ने ही शिक्षा द्वारा मनुष्य के विकास का मार्ग बतलाया है। स्वामी विवेकानंद और महात्मा गांधी दोनों ज्ञान आधारित शिक्षा के स्थान पर

आचरण आधारित शिक्षा के समर्थक थे , जो व्यक्ति को अपने अस्तित्व के संघर्ष के लिए तैयार करती हो।

गांधी जी का मूल मंत्र था शोषण विहीन समाज की स्थापना करना जिसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षित होना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज की स्थापना संभव नहीं है।

आज के वर्तमान समय में हम अपनी प्राचीन संस्कृति एवं परंपराओं को भूलकर भौतिकवादी सभ्यता को खुले तौर पर अपना रहे है। जिससे हमारे समाज में अराजकता , भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिल रहा है। ऐसी स्थिति में स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी का शिक्षा–दर्शन हमें सही दिशा का निर्देश देता है। आज धार्मिक एवं आध्यात्मिक जागृति के द्वारा एक सच्चा एवं स्वावलंबी इंसान बनने की नितांत आवश्यकता है।

मैं अपनी शोध कार्य के द्वारा विवेकानंद जी और गांधी जी के शिक्षा दर्शन कि तुलनात्मक अध्ययन करूंगी। उनकी शिक्षा दर्शन कैसे आज समाज को सही दिशा प्रदान कर सकती है तथा उनकी शिक्षा दर्शन वर्तमान में कैसे प्रासंगिक है। यह समाज तक पहुंचना चाहती हूं।

''शिक्षा का अर्थ या नहीं कि आपके दिमाग में बहुत से बातें इस तरह ठूस दी जाए जो अत्यधिक होने लगे और आपका दिमाग उन्हें जीवन भर हजम न कर सके। जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सके, मनुष्य बन सके, चरित्र गठन कर सके ,और विचारों को सामंजस्य कर सके वही वास्तविक शिक्षा कहलाने योग्य है।'' [9]

स्वामी जी ने भारतीय आध्यात्मिक शिक्षा के पूर्ण जागरण को सफल किया। वहीं पाश्चात्य जगत की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा को भी स्वीकारा है। जिससे युवा वर्ग को आत्मनिर्भर बनाया जा सके। वही गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा के द्वारा नैतिक विकास का मार्ग दिखाया तथा शिक्षा का आधार शिल्प को बनाकर शिल्प शिक्षा के माध्यम से समाज को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने पर जोर दिया। स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के दर्शन का अध्ययन कर उनके शिक्षा दर्शन को जानकर आज भी युवा पीढ़ी आध्यात्मिक तथा नैतिक जागृति की ओर अग्रसर होगी एवं मानवता के बीच सामंजस्य बनाकर अपनी संस्कृति के साथ बेहतर जीवन दिया जा सके।

- **<u>वर्तमान ज्ञान में योगदान (Contribution to the current knowledge</u>)**

वर्तमान समय में स्वामी विवेकानंद महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन सभी महत्वपूर्ण विधाओं महत्वपूर्ण है। शिक्षा मनुष्य को सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त करती है और वर्तमान समय में शिक्षा लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। शिक्षा ही वह वस्तु है जो मानव को जन्म जाति एवं अन्य कारणो से उत्पन्न वर्गीकृत विषमताओं को पीछे छोड़ते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है। विवेकानंद एवं गांधी दोनों ही एक महान शिक्षा शास्त्री ,दार्शनिक एवं समाज सुधारक थे ,उन्होंने सैद्धांतिक ही नहीं बल्कि व्यावहारिक शिक्षा पर भी बल दिया तथा मानवता एवं आध्यात्मिकता से समाज को अवगत करवाया है। उन्होंने ऐसी शिक्षा पद्धति की बात की जो आधुनिक व्यवस्था के अनुरूप हो, जो समाज को कुछ देने की चेष्टा रखता हो, जो जमीन से जुदा हो, जो ज्ञान के साथ–साथ छात्रों को आजीविका का साधन भी उपलब्ध कराए तथा उनके चरित्र निर्माण में भी सहायता प्रदान करती हो।

- ## भविष्य में कार्य होने की संभावना (Possibility of future work):–

यह शोध कार्य वर्तमान में ही नहीं अपितु भविष्य में भी उपयोगी है क्योंकि शिक्षा दर्शन सर्वयुगीनआवश्यकता है शिक्षा पद्धतियां समाज का दृष्टिकोण हर युग में, हर समय में भले ही भिन्न–भिन्न रहा हो परंतु शिक्षा से मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो सकता है और मनुष्य को समाज में ही रहना है एवं बिना दर्शन की शिक्षा नहीं प्राप्त हो सकती यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है।

- ## शोध की सीमाएं (Limitation of tha research work):–

किसी भी अनुसंधान कार्य को पूर्ण करने हेतु उस अनुसंधान कार्य की सीमा का निर्धारण करना परम आवश्यक होता है, क्योंकि बिना सीमा का निर्धारण किए शोध प्रबंध की लेखनी में भटकाव के आशंका बनी रहती है।

अच्छा प्रस्तुत शोध कार्य की तय सीमा निम्नलिखित हैः

- प्रस्तुत शोधकार्य में विवेकानंद एवं गांधी के विचार एवं उनके दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन होगा।
- प्रस्तुत शोध के कार्य में स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में किए गए कार्यों का अध्ययन होगा।
- प्रस्तुत शोध के कार्य बालक एवं बालिका के शैक्षिक अवसरों की समानता का अध्ययन होगा।
- प्रस्तुत शोध कार्य में विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा संबंधी विचारों का अध्ययन होगा।
- प्रस्तुत शोध कार्य में वर्तमान में दोनों दार्शनिकों के शैक्षिक विचारों के मूल्यांकन का अध्ययन होगा।
- प्रस्तुत शोध कार्य में समय सीमा के अंतर्गत प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक शिक्षा की स्थिति का अध्ययन किया जाएगा।
- प्रस्तुत शोध कार्य में इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि किसी भी धार्मिक जाती नस्ल,लिंग, कुल आदि के आस्था को आहत न पहुंचे।

- ## संभावित अध्यायकरण (Tentative chapterization):–

अध्ययन की सुविधा के लिए शोध कार्य को निम्नलिखित संभावित अध्यायों में विभाजित किया गया हैः

- भूमिका
- प्रथम अध्यायः विवेकानंद एवं गांधी का जीवन परिचय
- द्वितीय अध्यायः विवेकानंद के शिक्षा दर्शन
- तृतीय अध्यायः गांधी के शिक्षा दर्शन
- चतुर्थ अध्यायः विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन
- पंचम अध्यायः विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता
- निष्कर्ष

➢ भूमिका :

शिक्षा किसी भी समाज में निरंतर चलने वाली वह सउद्देश्य सामाजिक एवं व्यवहारिक प्रक्रिया है जिसके प्रयोग से मानव के जन्मजात शक्तियों का विकास, उसकी कला कौशल एवं ज्ञान में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन देखी जा सकती है। दार्शनिको की दृष्टि से शिक्षा मानव जीवन के अंतिम ध्येय की प्राप्ति का मार्ग होती है। जगतगुरु शंकराचार्य के अनुसार,'' सः विद्या या पीमुक्तिते, अर्थात

शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाये।'' [10] प्रतिवादी दार्शनिक हरबर्ट स्पेंसर के अनुसार,''शिक्षा का अर्थ अंत शक्तियों का बाह्य जीवन से समन्वय स्थापित करना है।'' [11]

इस भाग में शिक्षा एवं दर्शन के बीच संबंध ,शिक्षा के स्वरूप ,मूल्य एवं शिक्षा के सामान्य परिचय का अध्ययन किया जाएगा। शिक्षा और दर्शन के मध्य संबंध इस बात से भी स्पष्ट होता है कि जितने भी शिक्षा शास्त्री हुए है वह सब महान दार्शनिक रहे हैं। दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है , शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा दर्शन के सिद्धांतों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाया जा सकता है।

➢ प्रथम अध्यायः विवेकानंद एवं गांधी का जीवन परिचय

विवेकानंद तथा गांधी विश्व के महान विचारको मे एक थे। वे दोनो जनसाधारण की उन्नति के लिए सर्वदा ही चिंतित रहे है। दोनों विचारको ने मनुष्य के आध्यात्मिक ,नैतिक एवं सामाजिक कल्याण के लिए निरंतर प्रत्यनशील रहे। इन दोनों दार्शनिकों के जीवन परिचय निम्नवत हैः

'स्वामी विवेकानंद : स्वामी विवेकानंद ने भारत में उस समय जन्म लिया जब यहां हिंदू धर्म के ऊपर संकट के बादल मंडरा रहे थे तथा भारत में हिंदू धर्म धुंधला होते जा रहा था। ब्राह्मण, पुरोहितों तथा पंडितों ने हिंदू धर्म को अत्यधिक अंधविश्वासपूर्ण एवं आडंबरवादी रूप प्रदान कर दिया था। तब स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म को पूर्ण पहचान दिलवाई। स्वामी विवेकानंद जी के पहले हिंदू धर्म विभिन्न छोटे–छोटे टुकड़ों में बांटा हुआ था। 30 वर्ष की आयु में स्वामी विवेकानंद ने (11 सितंबर 1893) विश्व धर्म सम्मेलन शिकागो अमेरिका में हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया और हिंदू धर्म को सार्वभौमिक पहचान दिलाई।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर जी ने एक बार कहा था ,''यदि आप भारत को जानना चाहते हो तो विवेकानंद जी को पढ़िए उसमें आप सब कुछ भावनात्मक ही पाओगे अभावात्मक कुछ भी नहीं।'' [12]

'महात्मा गांधीःमहात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर सन 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हिंदू परिवार में हुआ। महात्मा गांधी की माता अति धार्मिक महिला थी महात्मा गांधी का पालन पोषण वैष्णव मत को मानने वाले परिवार में हुआ। उनके पालन पोषण में जैन मत का भी गहरा प्रभाव पड़ा। यही कारण है कि गांधी जी ने मुख्य सिद्धांत मे अहिंसा,आत्म शुद्धि और शाकाहार को अपनाया था। गांधी जी शिक्षा की दृष्टि से एक औसत दर्जे की विद्यार्थी थे लेकिन उन्हें समय–समय पर पुरस्कार भी प्राप्त हुए, पांचवी और छठी कक्षा मे क्रमश चार और दस रुपए की छात्रवृत्ति भी मिली। गांधी जी अपनी जीवन के किशोरावस्था के समय में गुप्त रूप से नास्तिकवाद को भी अपनाया ध्रूप–पान एवं मांस का सेवन भी किया ,लेकिन यह गलत है इसका एहसास होने के बाद उन्हें न दोहराने का निश्चय भी कर लिया गांधी जी ने राजा हरिश्चंद्र एवं पहलाद को आदर्श के रूप में माना। गांधी जी का विवाह मात्र 13 वर्ष की अल्प आयु में हो गई थी वह खुद बाल विवाह के विरोधी है इस बात को उन्होंने अपने पुस्तक में भी कहा है,'' जिस उम्र में मेरा विवाह हुआ मैं उस उम्र के बालकों को अपनी छत्रछाया में देखता हूं ,और फिर उस उम्र में हुई अपने विवाह के बारे में सोचता हूं। तब मुझे अपने ऊपर दया आती है ,और उन्हें मैं अपनी पीड़ा से बचने के लिए बधाई देता हूं। मैं अपनी विचलित कर देने वाला बाल विवाह के पक्ष में कोई उचित पक्ष नहीं रख पाता हूं।'' [13] विवाह के उपरांत एवं स्कूली शिक्षा समाप्त होने पर मुंबई के एक कॉलेज में कुछ दिन पढ़ने के बाद अपनी बी.ए की पढ़ाई अधूरा छोड़ लंदन चले गए कानून की पढ़ाई के लिए। लंदन में 3 वर्ष की अपनी शिक्षा पूरी कर बैरिस्टर बने उनके बाद उनके जीवन की असली संघर्ष की यात्रा शुरू हुई जो अहिंसा आंदोलन से लेकर राष्ट्रपिता बनने तक उनके जीवन प्रत्यय चलती रही।

इस अध्याय में विवेकानंद एवं गांधी के जीवन परिचय एवं उनके व्यक्तित्व की विस्तार पूर्वक अध्ययन किया जाएगा।

➢ द्वितीय अध्यायः विवेकानंद की शिक्षा दर्शन

शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी विवेकानंद का अद्वितीय स्थान है। भारत के संतों की परंपरा में देश के बाहर भी उन्हें महान ख्याति प्राप्त है। स्वामी जी के अनुसार,'' धर्म शिक्षा का अंतिम आधार है।'' विभिन्न विज्ञान एवं शिक्षण के साथ–साथ धर्म की शिक्षा भी दी जा सकती है। स्वामी जी के अनुसार आधुनिक विज्ञान की सहायता से अपने ज्ञान को बढ़ाया जा सकता है धर्म से शिक्षा को उच्च कोटि का बनाया बनाया जा सकता है। बालकों को इतिहास, भूगोल, साहित्य की शिक्षा दीजिए साथ–साथ उन्हें धर्म से अवगत करवाएं। विवेकानंद जी ने विश्व धर्म सम्मेलन में कहा था ,''हमारी भारतीय संस्कृति, हमारा भारतीय दर्शन उसे बिंदु से प्रारंभ होता है, जहां सारे संसार की संस्कृतियों और दर्शन समाप्त हो जाते हैं। जहां तुम अंधेरे में भटकने लगते हो वहां हिंदू धर्म ज्ञान की मशाल दिखाने के लिए सर्च लाइट लेकर आता है।'' [14]

स्वामी जी का मुख्य उद्देश्य था मानव का नव निर्माण। व्यक्ति समाज का मूल स्तम्भ होता है, व्यक्ति के सर्वांगीण उत्थान से समाज का सर्वाधिक उत्थान होता है एवं व्यक्ति की समाप्ति से समाज की समाप्ति होती है। स्वामी जी ने अपनी शिक्षा दर्शन में व्यक्ति एवं समाज के बीच सामंजस्य और समान विकास को ही शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य माना। स्वामी जी के अनुसार ,''सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य के मानसिक शक्तियों का विकास हो, जिस तरह चरित्र में ज्ञान ,भक्ति और योग इन तीनों का सुंदर मिश्रण होता है तभी वह सर्वोत्तम कोटि का बनता है, जिस प्रकार एक पक्षी को उड़ाने के लिए अंगों की आवश्यकता होती है दो पंख और एक पटवार स्वरूप पूछ उसी प्रकार ज्ञान एवं भक्ति मानो दो पंख है ,एवं योग पूछ है जो इनमें सामंजस्य बनाए रखना है।'' [15]

स्वामी विवेकानंद के अनुसार कोई व्यक्ति किसी दूसरे को नहीं सिखाता ,प्रत्येक व्यक्ति अपने आप स्वयं सीखना है।''मन की एकाग्रता ही समस्त ज्ञान का उत्स है ,जिसके द्वारा ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है।'' [16]

इस अध्याय में आगे विस्तार पूर्वक स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन का अध्ययन किया जाएगा। जिसमें स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ, शिक्षा का उद्देश्य ,पाठ्यक्रम ,शिक्षण पद्धति ,शिक्षक, शिक्षार्थी विद्यालय , अनुशासन एवं शिक्षा संबंधित कार्य जैसे :धार्मिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा ,जनसाधारण की शिक्षा नारी शिक्षा, पौढ़ शिक्षा आदि के बारे में व्याख्या एवं उनकी शिक्षा सम्बन्धित स्थापित संस्थाओं का अध्ययन भी किया जाएगा।

➢ तृतीय अध्यायः गांधी का शिक्षा दर्शन

गांधी जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदर्शवादी रहा है परंतु उनके आचरण पर प्रयोजनवादी विचारधारा का प्रभाव दिखता है। विश्व के अधिकांशत लोग उन्हें महान राजनीतिक एवं समाज सुधारक के रूप में पहचानते हैं।इन सब के साथ वो एक शिक्षा दार्शनिक भी थे। उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति के लिए शिक्षा परम आवश्यक है। गांधी जी का शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वह शोषण विहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे। जिसके लिए वह मानते थे कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित होना चाहिए क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है।

उन्होंने अपनी शिक्षा दर्शन में मनुष्य को एकादश व्रत, अन्नाहार ,सत्य, अहिंसा ,ब्रह्मचर्य ,अपरिग्रह, अस्पृश्यता निवारण, सर्वधर्म समभाव और विनम्रता आदि के पालन पर जोर दिया है। गांधी जी मानते थे

कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा ग्रहण करें एवं वह शिक्षित बने वह मात्र साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। वह साक्षरता को ज्ञान या ज्ञान का साधन भी स्वीकार नहीं करते थे। उनके शब्दों में,'शिक्षा से मेरा अभिप्राय है – बालक और मनुष्य के शरीर मस्तिष्क और आत्मा में पाए जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चतुर्मुखी विकास।

इस अध्याय में आगे विस्तार पूर्वक गांधी के शिक्षा दर्शन का अर्थ, शिक्षा के आधारभूत सिद्धांत, शिक्षा का उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि , शिक्षक का स्थान ,शिक्षार्थी का स्थान। नारी शिक्षा, नैतिक शिक्षा, पौढ़ शिक्षा , बुनियादी शिक्षा एवं शिक्षा संबंधी स्थापित उनके द्वारा आश्रमों का अध्ययन किया जाएगा , जिससे उनकी शिक्षा दर्शन को सही से समझा जा सके।

- **चतुर्थ अध्यायः विवेकानंद एवं गांधी की शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन**

इस अध्याय में विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा दर्शन की समानता, असमानता शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य, पाठ्यक्रम आदि का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

- **पंचम अध्यायः विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा दर्शन का वर्तमान में प्रासंगिकता**

इस अध्याय में विवेकानंद और गांधी के शिक्षा दर्शन को जान लेने के पश्चात दोनों की शिक्षा दर्शन का वर्तमान में प्रासंगिकता को जानने का प्रयास करेंगे।

- **निष्कर्ष** :

स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा मनुष्य के अंतर्निहित पूर्णता की अभिवृत्ति है। स्वामी जी ने कहा है कि ''अज्ञानता से मुक्त होकर ही हम पाप से मुक्त हो सकते हैं, अज्ञान उसका कारण है जिसका फल पाप है।''[17] विवेकानंद एवं गांधी ने शिक्षा के हर पहलू को महत्व दिया है। उन्होंने छात्र शिक्षक संबंध, शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि की बात कही है दोनों ही स्त्री पुरुष समानता के समर्थन थे। दोनो ने ही महिलाओं की शिक्षा पर भी विषेश जोर दिया था।

अतः यह कहां जा सकता है कि अनेक समानताओं असमानताओं की होते हुए भी विवेकानंद एवं गांधी एक दूसरे के पूरक है । इन दोनो को अलग–अलग रूप पर स्थापित न करके एक ही दृष्टि से देखना चाहिए दोनों ने ही समाज को अलग–अलग रूप में प्रभावित किया ,परंतु दोनो की मंजिल एक ही थी । समाज की प्रत्येक वर्ग को शिक्षा प्रदान करवाना तथा उनके नैतिक एवं आध्यात्मिक आचरण का विकास करना मकसद था। जिससे वह स्वावलंबी बन सके तथा अपने भविष्य का स्वयं विकास कर सकें। अतः इस भाग में उपरोक्त सभी अध्याय में आलोचित तथ्य का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा। विवेकानंद एवं गांधी के शिक्षा दर्शन के मानवीय गुणों का विकास किया जा सकता है। जैसे राष्ट्रीय एकता ,सर्वधर्म समन्वय, नारी शिक्षा पर बल ,अपने ज्ञान की खोज ,शिक्षण विधि आदि कई ऐसे विषय है जिनका वर्तमान समय मे भी प्रसंगिगता बनी हुई है।

• संदर्भ सूची (Reference):-

1. स्वामी विवेकानंद, कर्म योग, पृष्ठ – 6 , अनुवादक शर्मा श्रीराम विलास , सरस्वती पुस्तक भंडार आर्यनगर, लखनऊ, प्रथामावृत्ति 2000
2. स्वामी विवेकानंद, भारतीय नारी, पृष्ठ – 65 – 66, तृतीय संस्करण, (1154), श्रीराम आश्रम, नागपुर, मध्य प्रदेश ।

3. .एम. जी. पी.001,गांधीः व्यक्तिव और उनका काल, गांधी स्मृति एव दर्शन स्मृति, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान,विद्यापीठ पृष्ठ–122 ।
4. .मुरारी , डॉ .कृष्ण,गांधी के मानवतावादी दर्शन कि प्रासंगिकता, पृष्ठ सं.200, शौयम प्रकाशन वाराणसी–221008, भारत।
5. .झा, द्विजर्न्दनारायण, श्रीमाली कृष्ण मोहन,प्राचीन भारत का इतिहास, पृष्ठ. सं.762, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
6. रावत, प्यारेलाल,भारतीय शिक्षा, पृष्ठ. सं.46–47,भारत पब्लिकेशन,आगरा।
7. रावत, प्यारेलाल,भारतीय शिक्षा, पृष्ठ. सं.24,भारत पब्लिकेशन,आगरा।
8. रावत, प्यारेलाल,भारतीय शिक्षा, पृष्ठ. सं.62,भारत पब्लिकेशन,आगरा।
9. स्वामी विवेकानंद, विवेकानंद संचयन, पृष्ठ – 184 , भाग – 1 , भारती भाषा प्रकाशन दिल्ली – 110032
10. रावत, प्यारेलाल,भारतीय शिक्षा, पृष्ठ. सं.11,भारत पब्लिकेशन,आगरा।
11. रावत, प्यारेलाल,भारतीय शिक्षा, पृष्ठ. सं.12,भारत पब्लिकेशन,आगरा।
12. रंजन राजीव, युगद्रष्टा विवेकानंद, सत्साहित्य प्रकाशन, 205 – बी चावड़ी बाजार, दिल्ली – 110006 संस्करण प्रथम (2008)।
13. गांधी के सामाजिक विचार, इकाई ध्9 , रूपरेखा 9.1 , पृष्ठ .सं .95।
14. रंजन राजीव, युगद्रष्टा विवेकानंद, पृष्ठ – 1 , सत्साहित्य प्रकाशन, 205 – बी, चावड़ी बाजार, दिल्ली – 110006, संस्करण प्रथम (2008)।
15. रंजन राजीव, युगद्रष्टा विवेकानंद, पृष्ठ – 95 , सत्साहित्य प्रकाशन, 205– बी चावड़ी बाजार, दिल्ली – 110006, संस्करण प्रथम (2008)।
16. रंजन राजीव, युगद्रष्टा विवेकानंद, पृष्ठ – 95 , सत्साहित्य प्रकाशन, 205– बी चावड़ी बाजार, दिल्ली – 110006, संस्करण प्रथम (2008)।
17. स्वामी विवेकानंद, विवेकानंद साहित्य, खण्ड – 10 , पृष्ठ – 49 , अद्वैत आश्रम, , डि ही एण्टाली रोड कोलकाता ।

- **<u>ग्रंथ सूची (Bibliography) :</u>**

1. अग्रवाल जैसी, भारत में नारी शिक्षा, विद्या विहार, नई दिल्ली।
2. एम. जी. पी.001, गांधी के आर्थिक विचार, गांधी स्मृति आवाम दर्शन स्मृति, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ।
3. गोयल डॉ० राजकुमार और अग्रवाल डॉ० मीरा, शिक्षा दर्शन और आत्म विकास की अवधारणाएं, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. गांधी जी,मेरे सपनो का भारत,विवेक, जितेन्द्र देसाई,नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – 370014, पहली आवृत्ति,1960।
5. Ghosh Gautam, The Prophet of modern India: A Biography Of Swami Vivekananda, Rupa & company, 2003.
6. तिवारी उमेश, एन० डी०, प्रगतिशील भारत में शिक्षा, आगरा ज्योति प्रकाशन।
7. पाण्डेय डॉ० के० पी०, शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2019.
8. पाठक पी. डी. एवं त्यागी, जी. एस. डी. , शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

9. माथुर डॉ० एसव – शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार श्री अरविंद पुस्तक मंदिर आगरा।
10. MAED-01, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, उत्तर प्रदेश, राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, रजन्तिपुरम (सेंटर – एफ), फाफामोड़, इलाहाबाद 211013.
11. महात्मा गांधी,सत्य के साथ मेरा प्रयोग,प्रभात, पेपरबैक्स , 4/19 आसफ अली रोड,नई दिल्ली – 110002।
12. महात्मा गांधी , सुनो विद्यार्थियों ,प्रभात, पेपरबैक्स , 4/19 ,आसफ अली रोड,नई दिल्ली–110002।
13. मुरारी , डॉ.कृष्ण,गांधी के मानवतावादी दर्शन कि प्रासंगिकता , शौयम प्रकाशन , रामनगर , वाराणसी –221008, उत्तर प्रदेश,भारत।
14. रंजन राजीव, युगद्रष्टा विवेकानंद, सत्साहित्य प्रकाशन, 205–बी चावड़ी बाजार, दिल्ली – 110006 संस्करण प्रथम (2008) ।
15. रावत, प्यारेलाल, भारतीय शिक्षा,भारत पब्लिकेशन,आगरा।
16. लाल बसंत कुमार, समकालीन भारतीय दर्शन मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 2016 ।
17. विवेकानंद साहित्य, जन्मशती संस्करण, अद्वैत आश्रम खंड 5, डि ही एण्टाली रोड कोलकाता 14.
18. विवेकानंद साहित्य, जन्मशती संस्करण, अद्वैत आश्रम खंड 4, डि ही एण्टाली रोड कोलकाता 14.
19. Sister Nivedita, The Web of Indian life , Margaret E. Nobel, W. Heinemann, 6 old Court House Street Calcutta 167 mount Road, Madras Landon And New York, 1904.
20. सक्सेना, डॉ लक्ष्मी, समकालीन भारतीय दर्शन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उत्तर प्रदेश, हिंदी संस्थान, लखनऊ प्रथम संस्करण 2016.
21. स्वामी विवेकानंद, विवेकानंद संचयन, भाग 1, भारतीय भाषा प्रकाशन, दिल्ली – 110032.
22. स्वामी विवेकानंद, कर्म योग, अनुवादक शर्मा श्रीराम विलास , सरस्वती पुस्तक भंडार आर्यनगर, लखनऊ, प्रथामावृत्ति 2000 ।
23. स्वामी विवेकानंद, भारतीय नारी, तृतीय संस्करण, (1154), श्रीराम आश्रम, नागपुर, मध्य प्रदेश ।
24. स्वामी विवेकानंद, विवेकानंद साहित्य, खण्ड – 10 , अद्वैत आश्रम, , डि ही एण्टाली रोड कोलकाता ।
25. स्वामी विवेकानंद, भारत में विवेकानंद, रामकृष्ण आश्रम, धन्तोली, नागपुर – 2 मध्य प्रदेश ।
26. झा द्विजर्न्दनारायण , श्रीमाली कृष्ण मोहन,प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निर्देशालय, नई दिल्ली विश्वविद्यालय, 2001।
27. श्रीमती डॉ० प्रेमलता, समकालीन भारतीय दर्शन के कुछ मानवतावादी, यांत्रिक, तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय माध्यमिक तथा उच्च स्तर शिक्षा विभाग भारत सरकार 2001.